ABVP के अमृत महोत्सव समापन समारोह पर
माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का अभिभाषण

दिनांक 18 जून 2023, रविवार	समय : 11:00 AM	स्थान : श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र , गुवाहाटी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख श्री सुनील आम्बेकर जी,

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री आशीष चौहान जी,

प्रदेशाध्यक्ष श्री रोबिन काकोति जी,

प्रदेश मंत्री श्री सीमांत कुमार बैश्य जी,

स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री नबा बजरबरुआ जी एवं

मंत्री श्री सीमांत दास जी,

मीडिया से हमारे मित्रों,

उपस्थित अन्य अतिथिगण,

देवियों और सज्जनों,

नमस्कार!

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के " अमृत महोत्सव समापन समारोह" में आप सबके बीच उपस्थित होकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। मैं

इस समारोह के आयोजन के लिए परिषद को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ।

मित्रों,

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद छात्र एवं राष्ट्रहित में समर्पित विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन है। विधार्थी परिषद ने अपनी स्थापना के 75 वर्ष पूरे कर लिए है। मैं इसके लिए परिषद के विकास और विस्तार करने में अहम भूमिका निभाने वाले पूर्व और वर्तमान नेताओं और कार्यकर्ताओं को हृदय से बधाई देता हूँ।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ज्ञान, शील और एकता के नारे के साथ चलने वाला एक मात्र राष्ट्रवादी छात्र संगठन है। आजादी के बाद एक मजबूत राष्ट्र के निर्माण और अपनी संस्कृति को बचाए और बनाए रखने के लिए पूरे देश ने एक विकसित और समृद्ध देश का सपना देखा था। इसमें विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले युवाओं की समुचित भागीदारी के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की स्थापना की गई।

वैसे तो आरएसएस कार्यकर्ता बलराज मधोक की अगुवाई में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की स्थापना 1948 में हुई थी। लेकिन, इसका औपचारिक पंजीयन 9 जुलाई 1949 को हुआ। प्रो. ओम प्रकाश बहल प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष बने एवं स्व. आचार्य गिरिराज किशोर जी पहले पूर्णकालिक बने। प्रोफेसर यशवंतराव केलकर 1958 में इसके मुख्य कार्यवाहक बने। केलकर जी को इस संगठन एवं अनूठी कार्यपद्धति को खड़ा करने के पीछे का मुख्य आधार बताया जाता है। श्री मदन दास देवीजी ने संगठन मंत्री रहकर पूरे देश में संगठन खड़ा किया। इसके बाद प्रो. बाल आपटे इनके साथ जुड़े और परिषद् को और भी मजबूती मिली। 1974 में प्रो. बाल आपटे को परिषद का

अध्यक्ष चुना गया तो इनके मार्गदर्शन में परिषद का प्रसार पूरे देश में हुआ। इस कालखंड को परिषद् का स्वर्णकाल भी कहा जाता है।

विद्यार्थी परिषद् का मानना रहा है कि छात्रशक्ति ही राष्ट्रशक्ति होती है। इनका मूल उद्देश्य राष्ट्रीय पुनर्निर्माण है। छात्र कल का नहीं, आज का नागरिक है एवं शैक्षिक परिवार की कल्पना विद्यार्थी परिषद का मूल चिंतन है, जिस पर आज भी चल रही है। स्थापना काल से ही इस संगठन ने छात्रहित और राष्ट्रहित से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से उठाया है और कई देशव्यापी आंदोलनों का नेतृत्व किया है।

पूर्वोत्तर में भी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का सांगठनिक विकास का दौर भी काफी लम्बा है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की स्थापना के समय से पूर्वोत्तर में भी इस छात्र संगठन ने अपने उद्देश्यों के लिए कार्य किया।

देश की आजादी से लेकर 90 के दशक तक पूर्वोत्तर भारत में राष्ट्वादी विचारधारा से काम करना काफी चुनौतिपूर्ण था। इसके बावजूद भी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने यहां के छात्रों और लोगों के साथ मिलकर राष्ट्रवाद के लिए अनवरत काम किया।

पहले अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का केवल एक प्रांत हुआ करता था। धीरे-धीरे असम के सभी प्रांतों में परिषद का विस्तार हुआ। मुझे जानकर खुशी है कि सैकड़ों कार्यकर्ता असम तथा पूर्वोत्तर से आजीवन काम करने के संकल्प से परिषद में काम कर रहें है।

मित्रों,

हमारे देश ने 1947 में ब्रिटिश हुकुमत की बेड़ियों को तोड़कर आजादी हासिल की थी। कई महान वीरों के बलिदानों के बाद हमें यह आजादी मिली। 15 अगस्त 2022 को देश की आजादी के 75 वर्ष पूरे हो गए। आजादी की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर हम " आजादी का अमृत महोत्सव" मना रहे

हैं। आजादी का अमृत महोत्सव हमारे स्वतंत्रता सेनानियों और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए एक श्रद्धांजलि है।

मित्रों,

आजादी का अमृत महोत्सव हमारी संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवसाली इतिहास की अभिव्यक्ति है। 25 वर्षों के बाद 2047 में देश की आजादी के 100 साल पूरे हो जाएंगे। 25 वर्षों बाद यह देश के लिए अमृत काल होगा। इस "अमृत काल" का लक्ष्य एक ऐसे भारत का निर्माण करना है, जो दुनिया की शक्तिशाली और सबसे जीवंत अर्थव्यवस्था वाला होगा। हमारे देश को 2047 में विश्व गुरु बनाने के लिए हमें सही दिशा में काम करना होगा।

हमारा देश विविध और समृद्ध संस्कृति की भूमि है। आइए हम अपनी आजादी के अमृत काल को विविधताओं का संगम काल बनाएं, जहां समाज के सभी वर्गों के लोग एकजुट होकर अमृतमय भारत के हमारे सपने को साकार करने के लिए कार्य करे।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद हमेशा हमारी संस्कृति, परंपरा, इतिहास और विरासत के क्षेत्र में हमारी अपनी विशिष्टता को बढ़ावा देने के लिए काम करती रही है। हमें पूर्ण विश्वास है कि परिषद अमृतमय भारत बनाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

अंत में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद को उनके अमृत महोत्सव के समापन समारोह के लिए एक बार फिर बधाई देता हूँ तथा इसके सफल आयोजन के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

धन्यवाद

जय हिन्द